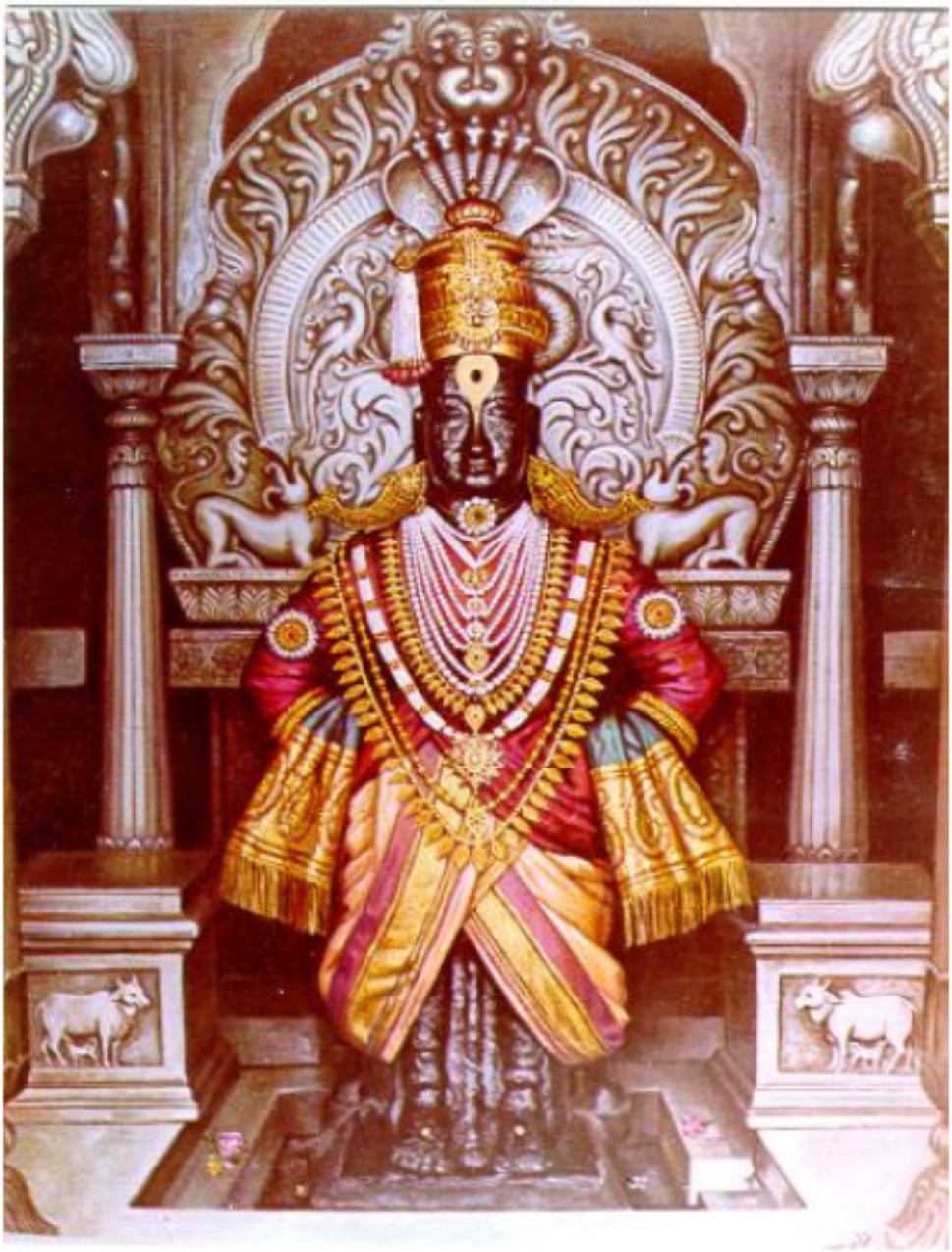

सदागमैकविज्ञेयं समतीतक्षराक्षरम्।
नारायणं सदा वंदे निर्दोषाशेषसद्गुणम्॥

ब्रह्मांता गुरवः साक्षात् इष्टं दैवम् श्रियः पतिः।
आचार्याः श्रीमदाचार्याः संतुमे जन्म जन्मनि॥

मन्मनोभीष्टवरदं सर्वाभीष्टफलप्रदं।
पुरंदरगुरुंवंदेदासश्रेष्ठं दयानिधिं॥

दास कक्ष

सतत गणनाथ

सतत गणनाथ सिद्धियनीव कार्यदलि।
मति प्रेरिसुवळु पार्वतिदेवि॥मु॥

कुति पथके मनवीव महारुद्रदेवरु।
हरिभकुति दायकळु भारतिदेवि।

युकुति शास्त्रगळल्लि वनजसंभवनरसि।
सत्कर्मगळ नडेसि सुज्ञान मति इत्तु।

गति पालिसुव नम्म पवमाननु।
चित्तदलि आनंद सुखवनीवळु रमा।

भकुत जनरोडेय नम्म पुरंदर विठलनु।
सतत इवरलि निंतु ई कृतिय नडेसुवनु

गुरुमध्वरायरिगे नमो

गुरुमध्वरायरिगे नमो नमो
नम्म गुरुमध्व संततिगे नमो नमो

श्रीपादराजरिगे गुरुव्यासराजरिगे।
गुरुवादिराजरिगे नमो नमो॥१॥

राघवेंद्रायरिगे वैकुंठदासरिगे
पुरंदरदासरिगे नमो नमो॥२॥

गुरु विजयदासरिगे भागण्णदासरिगे
श्रीरंगवलिद दासरिगे नमो नमो॥३॥

परम वैराग्यशालि तिम्मण्णदासरिगे
हुंडेकार दासरिगे नमो नमो॥४॥

गुरु श्रीशविठलन परम भक्तर चरण
सरसिजयुगगळिगे नमो नमो॥५॥

गुरुमध्वरायरिगे नमो नमो
नम्म गुरुमध्व संततिगे नमो नमो॥प॥

श्री गुरु गोविंद दासरु

सर्व शास्त्रार्थ सारज्ञान् चित्र लेख नतः परान्
गुरु गोविंद दासार्यान् नित्यं नौमि सतां मुधे

श्री जगन्नाथ दासरु

जलजेष्टनिभाकारं जगदीशपदाश्रयं।
जगतीतलविख्यातं जगन्नाथ गुरुं भजे॥

श्री गोपालदासरु

भूपालनत पादाब्जं पापालि परिहारिणं
गोपालदास मीडेहं गोपाल हरिदर्शनं

श्री विजय दासरु

अज्ञानतिमिरच्छेदं बुद्धिसंपत् प्रदायकं।
विज्ञानविमलं शांतं विजयाख्यगुरुं भजे॥

स्मरिसि बदुकिरो

स्मरिसि बदुकिरो दिव्य चरणकेरगिरो
दुरित तरिदु पोरेव विजयगुरुगळेंबर ॥प॥

दासरायन दयव सूसि पडेदन
दोषरहितन संतोषभरितन ॥१॥

ज्ञानवंतन दय निधान शांतन
मान्यवंतन बलु वदान्यदांतन ॥२॥

हरिय भजिसुव नरहरिय यजिसुव
दुरित त्यजिसुव जनके हरुष सुरिसुव ॥३॥

मोदभरितन पंचभेदवरितन
साधुचरितन मनोविषाद मरेतन ॥४॥

इवर नंबिद जनके भवविदेंबुदु
हवणवागदु नम्मवर मतविदु ॥५॥

पापकोटिय राशि लेपवागदु
ताप कळेवनु बलु दयापयोनिधि ॥६॥

कवनरूपदि हरिय स्तवन माडिद
भुवन बेडिद माधवन नोडिद ॥७॥

रंगनेंदन भववु हिंगितेंदन
मंगळांगन अंतरंगवरितन ॥८॥

काशिनगरदल्लिद्द व्यासदेवन
सूसि भजिसिद उल्लासभरितन ॥९॥

चिंते ब्याडिरॊ निश्चिंतरागिरॊ
शांतगुरुगळा पादवांतु नंबिरॊ ॥१०॥

खेदवागदु निमगे मॊदवाहुदु
आदि देवन सुप्रसादवाहुदु ॥११॥

ताप तडेवनॊ बंद पाप कडिवनॊ
श्रीपतीशन पदसमीपविडुवनॊ ॥१२॥

गंगे मिंदरे मलवु हिंगितल्लदे
रंगनोलियनु भक्तर संग दोरेयदे ॥१३॥

वेदवॊदलु मरिदे वाद माडलु
हादि दोरेयदु बुधर पाद नंबिदे ॥१४॥

लेक्कविल्लद देश तुक्कि बंदरू
दु:खवल्लदे लेश भक्ति दोरकदु ॥१५॥

दान माडलु दिव्य गान पाडलु
ज्ञान दोरेयदु इवरधीनवागदे ॥१६॥

निष्ठे यातके कंड कष्टव्यातके
दिट्ट गुरुगळ पाद मुट्टि भजिसिरॊ ॥१७॥

पूजे माडलु कंड गॊजु बीळलु
बीजमातिन फल सहज दोरकदु ॥१८॥

सुररु एल्लरु इवर करव पिडिवरु
तरळरंददि हिंदे तिरुगुतिप्परु ॥१९॥

ग्रहगळेल्लवु इवर्गे सहायवागुत
अहोरात्रिलि सुखद निवह कोडुववु ॥२०॥

व्याधि बारदो देहबाधे तट्टदो
आदिदेवन सुप्रसादवाहुदो ॥२१॥

पतितपामर मंदमतियु ना बलु
तुतिसलापने इवर अतिशयंगळ ॥२२॥

करुणदिंदलि एम्म पोरेवनल्लदे
दुरितकोटिय बेग तरिव दयदलि ॥२३॥

मंदमतिगळु इवर छंदवरियदे
निंदिसुवरु भवद बंध तप्पदु ॥२४॥

इंदिरापति इवर मुंदे कुणिवनु
अंद वचनव निजके तंदु तोर्पनु ॥२५॥

उदयकालदि ई पदव पठिसलु
मदडनादरू ज्ञान उदयवाहुदु ॥२६॥

सटेयिदल्लवो व्यासविठल बल्लनो
पठिसबहुदिदु केळि कुटिलरहितरु ॥२७॥

श्री कनक दासरु

श्री कनक दास वरद गोविंद गोविंद

श्री पुरंदर दासरु

मन्मनोभीष्टवरदं सर्वाभीष्टफलप्रदं।
पुरंदरगुरुंवंदेदासश्रेष्ठं दयानिधिं॥

यति कक्ष

श्री सत्य प्रमोद तीर्थ

सत्याऽभिज्ञ कराभ्जोतान् पंचाषट् वरुष पूजातान्।
सत्यप्रमोद तीर्थार्यान् नवमिन् न्यायसुधारतान्॥

श्री आघवेंद्र तीर्थरु

पूज्याय रघवेंद्राय सत्यधर्म रतायच।
भजतां कल्पवृक्षाया नमतां कामधेनुवे॥

श्री रघोत्तम तीर्थरु

रघोत्तम गुरुम् वंदे रघोत्तम पादार्चकम्।
गंभीःर्येनार्थ बहुल्य टीक तात्पर्य बोधकम्॥

श्री विजयेंद्र तीर्थरु

भक्तानां मानसं भोज भानवे कामधेनवे
नमतां कल्पतरुवे जयींद्र गुरवे नमः

श्री वादिरज तीर्थरु

तपोविद्याविरक्त्यादि सद्गुणौघाकरानहं।
वादिराजगुरून् वंदे हयग्रीवदयाश्रयान्॥

श्री व्यासराज तीर्थरु

अर्थिकल्पितकल्पोयं प्रत्यर्थि गजकेसरि।
व्यासतीर्थगुरुर्भूयादस्मदिष्टार्थसिद्धये॥

श्री श्रीपादराज तीर्थरु

काले फलति सुरद्रुः चिंतामणिरपि याचने दाता।

वर्षति सकलमभीष्टं दर्शनमात्रात् श्रीपादराण्मुनिः॥

श्री जयतीर्थरु

मिथ्यासिद्धांतदुर्ध्वांतविध्वंसनविचक्षणः॥
जयतीर्थाख्यतरणिर्भासतांनो हृदंबरे॥

श्री अक्षोभ्य तीर्थरु

श्री अक्षोभ्य तीर्थ वरद गोविंद गोविंद

श्री माधव तीर्थरु

श्री माधव तीर्थ वरद गोविंद गोविंद

श्री नरहरि तीर्थरु

श्री नरहरि तीर्थ वरद गोविंद गोविंद

श्री पद्मनाभ तीर्थरु

श्री पद्मनाभ तीर्थ वरद गोविंद गोविंद

श्री आनंद तीर्थरु

पंचभेदात्मक प्रपंचके।
पंचरूपात्मकने दैवक।
पंचमुखशक्रादिगळु किंकररु श्रीहरिगे॥
पंचविंशति तत्त्व तरतम।
पंचिकेगळनु पेळ्द भावि वि।
रिंचियेनिपानंदतीर्थर नेनेवेननुदिनवु॥

अभ्रमं भंग रहितं अजडं विमलं सदा
आनंदतीर्थ मथुलं भजे तापत्रयापहं

देवता कक्ष

सत्य जगतिदु

सत्य जगतिदु पंचभेदवु नित्य श्री गोविंदन॥प॥
कृत्यवरितु तारतम्यदि कृष्णनधिकेंदु सारिरै॥अ.प॥

जीव ईशगे भेद, सर्वत्र जीव जीवके भेदवु।
जीव जड, जड जडके भेद जीव जड परमात्मगे॥१॥

मानुषोत्तमगधिप क्षितिपरु मनुजदेव गंधर्वरु।
जानपित्राजानकर्मजदानवारितत्वात्मरु॥२॥

गणप मित्ररु सप्ति ऋषिगळु वह्नि नारद वरुणनु।
इनजगे सम चंद्रसूर्यरु मनुसुतेयु हेच्चु प्रवहनु॥३॥

दक्षसम अनिरुध– गुरु शचि– रति स्वायंभुवरार्वरु।
पक्ष प्राणनिगिंत कामनु किंचिदधिकनु इंद्रनु॥४॥

देवेंद्रनिगिंदधिक महरुद्रदेव समशेषगरुडरु।
केवलधिकरु शेषगरुडगे देवि भारति सरस्वति॥५॥

वायुविगे समरिल्ल जगदोळु वायुदेवरे ब्रह्मरु।
वायु ब्रह्मगे कोटि गुणदिंद अधिक शक्तळु श्री रमा॥६॥

अनंत गुणदिं लकुमिगधिकनु श्री पुरंदर विठलनु।
घन समरु इवगिल्ल जगदोळु हनुमहृत्पद्मवासिगे॥७॥

श्री गणपति देवरु

कडुकरुणि नीनेंदरिदु हे।
रोडल नमिसुवे निन्नडिगे बें।
बिडदे पालिसु परमकरुणासिंधु एंदेंदु॥
नडुनडुवे बरुतिप्प विघ्नव।
तडेदु भगवन्नामकीर्तने।
नुडिदु नुडिसेन्निंद प्रतिदिवसदलि मरेयदले॥

मोदल्वंदिपे निनगे गणनाथ

मोदल्वंदिपे निनगे गणनाथ
बंद विघ्न कळेयो गणनाथ

हिंदे रावणनु मदर्दिंद निन्न पूजिसदे
संद रणदल्लि गणनाथ

माधवन आज्ञेंद धमराय पूजिसलु
साधिसिद राज्य गणनाथ

मंगळ मूरिति गुरु रंग विठलन पद
हिंगदे पलिसो गणनाथ

श्री पार्वति देवियरु

आ परंतपनोलुमेयिंद स।
दापरोक्षिगळेनिसि भगव।
दूपगुणगळ महिमे स्वपतिगळाननदि तिळिव॥
सौपरणि वारुणि नगात्मज।
रापनितु बण्णिसुवे एन्न म।
हापराधगळेणिसदीयलि परम मंगळव॥

श्री रुद्र देवरु

नंदिवाहन नळिनिधर मौ।
ळेंदुशेखर शिव त्रियंबक।
अंथकासुरमथन गज शार्दूलचर्मधर।
मंदजासनतनय त्रिजग।
द्वंद्य शुद्ध स्फटिक सन्निभ।
वंदिसुवेननवरत पालिसो पार्वतीरमण॥

धवळगंगेय गंगाधर

धवळगंगेय गंगाधर महालिंग मा

धवन तॊरिसय्य गुरुकुलॊत्तुंग॥प॥

अर्चिसिदवरिगभीष्टव कोडुव
हेच्चिन अघगळ तरिदु बिसुटुव
दुश्चरितगळेल्ल दूरदल्लिडुव न
म्मच्युतगल्लद असुरर बडिवा॥१॥

मारन गेद्द मनॊहर मूर्ति
साधु सज्जनरिगे सुरचक्रवर्ति
धारुणियोळगे तुंबिदे निम्म कीर्ति
मूरारिय तॊरिसय्य निमगे शरणार्थि॥२॥

चन्न प्रसन्न श्री हयवदनन्न
अनुदिन नेनेवंते माडो नी एन्न
अन्यनल्लवो नानु गुरुवेंबे निन्न
इन्नादरू तॊरो धीर मुक्कण्ण॥३॥

धवळगंगेय गंगाधर महालिंग मा
धवन तॊरिसय्य गुरुकुलॊत्तुंग॥

श्री शॆषदॆवरु

यॊगिगळ हृदयके निलुक निग।
मागमैकविनुतन परमनु।
रागदिं द्विसहस्र जिह्वेगळिंद वर्णिसुव॥
भूगगनपाताळव्याप्तन।
यॊगनिद्रास्पदनेनिप गुरु।
नागराजन पदके नमिसुवे मनदूळनवरत॥

श्री गरुड दॆवरु

जगदुदरन सुरॊत्तमन निज।
पेगलोळांतु कराब्जदॊळ् पद।
युग धरिसि नखपंक्तियोळु रमणीयतरवाद।
नगधरन प्रतिबिंब काणुत।
मिगे हरुषदिं पोगळि हिग्गुव।
खगकुलाधिप कोडलि मंगळ सकल सुजनरिगे॥

श्री भारती देवियरु

कृतिरमण प्रद्युम्ननंदने।
चतुरविंशति तत्त्वपति दे।
वतेगळिगे गुरुवेनेसुतिह मारुतन निजपत्नि॥
सतत हरियलि गुरुगळलि स।
द्रतिय पालिसि भागवत भा।
रत पुराण रहस्य तत्त्व गळरपु करुणदलि॥

श्री सरस्वतिदेवियरु

चतुरवदनन राणि अतिरो।
हित विमल विज्ञानि निगम।
प्रततिगळिगभिमानि वीणापाणि ब्रह्माणि॥
नतिसि बेडुवे जननि लक्ष्मी।
पतिय गुणगळ तुतिपुदके स।
न्मतिय पालिसि नेलेसु नी मध्वदनसदनदलि॥

श्री मुख्यप्राणदेवरु

आरु मूरेरडोंदु साविर।
मूरेरडु शतश्वास जपगळ।
मूरु विध जीवरोळगब्जजकल्प परियंत।
ता रचिसि सत्वरिगे सुख ।
संसार मिश्ररिगधमजनरिग।
पार दुःखगळीव गुरुपवमान सलहेम्म॥

पवमान पवमान

पवमान जगदप्राणा संकरुषण–
भव, भयारण्य दहन॥प॥
श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय।
तवकदिंदलि कोडु कविजन प्रिया॥अ.प॥

हेमकच्चुट उपवीत धरिप मारुत।
कामादि वर्गरहित॥

व्योमादि सर्व व्यापुत सतत निर्भीत।
रामचंद्रन निजदूत॥
याम यामके निन्नाराधिपुदके।
कामिपे एनगिदु नेमिसि प्रतिदिन।
ईमनसिगे सुखस्तोमव तोरुत।
पामरमतियनु नी माणिपुदु॥१॥

वज्रशरीरगंभीर मुकुटधर।
दुर्जन वनकुठार।
निर्जर मणि दया पारवार उदार।
सज्जनरघपरिहार॥
अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु।
मूर्जगवरिवंते गर्जने माडिदे।
हेज्जे हेज्जेगे निन्न अब्जपादद धूळि।
मार्जनदलि भववर्जितनेनिसो॥२॥

प्राण अपानव्यानोदान समाना।
आनंदभारति रमणा।
नीने शर्वादिगीर्वाणाद्यरिगे ज्ञानधनपालिपवरेण्य।
नानु निरुतदलि ऐनेनेसगिदे॥
मानसादि कर्म निनगोप्पिसिदेनो।
प्राणनाथ सिरिविजय विठलन।
काणिसिकोडुवुदु भानुप्रकाशा॥३॥

श्री ब्रह्मदेवरु

निरुपमानंदात्मभव नि।
र्जरसभासंसेव्य ऋजुगण।
दरसे सत्त्व प्रचुर वाणीमुखसरोजेन।
गरुडशेषशशांकदळशे।
खरर जनक जगद्गुरुवे त्व।
च्चरणगळिगभिवंदिसुवे पालिपुदु सन्मतिय॥

श्री लक्ष्मी देवियरु

जगदुदरनतिविमलगुणरू।
पगळनालोचनदि भारत।

निगमततिगळतिक्रमिसि क्रियाविशेषगळ॥
बगेबगेय नूतनव काणुत।
मिगे हरिषदिं पोगळि हिग्गुव।
त्रिगुणमानि महालकुमि संतैसलनुदिनवु॥

जयकोल्हापुर निलये

जयकोल्हापुर निलये। भजदिष्टेतरविलये॥
तव पादौ हृदि कलये। रत्नरचितवलये॥प॥

जय जय सागरजाते। कुरुकरुणां मये भीते॥
जगदंबाभिधया ते। जीवति तव पोते॥१॥

जय जय सागरसदना। जय कांत्या जितमदना॥
जय दुष्टांतककदना। कुंदमुकुलरदना॥२॥

सुररमणीनुतचरणे। सुमनःसंकटहरणे॥
सुस्वररंजितवीणे। सुंदरनिजकिरणे॥३॥

भजदिंदीवरसोमा। भवमुख्यामरकामा॥
भयमूलाळिविरामा। भंजितमुनिभीमा॥४॥

कुंकुमरंजितफाले। कुंजर बांधव लोले॥
कलधौतामलच्येले। कृंतकुजनजाले ॥५॥

धृतकरुणारसपूरे। धनदानोत्सवधीरे॥
ध्वनिलवनिंदितकीरे। धीरे दनुजदारे॥६॥

सुरहृत्पंजरकीरा। सुमगेहार्पित हारा॥
सुंदरकुंजविहारा। सुरवरपरिवारा॥७॥

वरकबरीधृतकुसुमे। वरकनकाधिकसुषुमे॥
वननिलयादय भीमे। वदनविजितसोमे॥८॥

मदकलभालसगमने। मधुमथनालसनयने॥
मृदुलोलालकरचने। मधुरसरसगाने॥९॥

व्याघ्रपुरीवरनिलयॆ। व्यासपदार्पितहृदयॆ॥
कुरु करुणां मयि सदयॆ। विविध निगमगेयॆ॥१०॥

श्री वॆदव्यास दॆवरु

वॆदपीठ विरिंचि भव शा।
क्रादि सुरविज्ञानदायक।
मॊदचिन्मयगात्र लॊकपवित्र सुचरित्र॥
छॆदभॆदविषादकुटिलां।
तादिमध्यविदूर आदा।
नादिकारण बादरायण पाहि सन्नाण॥

वॆंकटरमणने बारॊ

वॆंकटरमणने बारॊ शॆषाचल वासने बारॊ॥प॥
पंकजनाभ परम पवित्र शंकर मित्रने बारॊ॥अ.प॥

मुद्दु मुखद मगुवे निनगे मुत्तु कॊडुवेनु बारॊ
निर्दयवॆकॊ निन्नॊळगे नानु पॊंदिद्दॆनु बारॊ॥१॥

मंधर गिरियनेत्तिदानंद मूरुतिये बारॊ
नंदनकंद गॊविंद मुकुंद इंदिरेयरसने बारॊ॥२॥

कामनय्य करुणाळॊ श्यामल वर्णने बारॊ
कॊमलांग श्री पुरंदर विठलने स्वामि रायने बारॊ॥३॥

दॆव बंदा नम्म

दॆव बंद नम्म स्वामि बंदानॊ।
दॆवर दॆव शिखामणि बंदानॊ॥प॥

उरगशयन बंदागरुडगमन बंद॥
नरगॊलिदव बंद। नारायण बंदनॊ॥१॥

मंदरॊद्धर बंद। मामनॊहर बंद॥
वृंदावनपति । गॊविंद बंदनॊ॥२॥

नक्रहरनु बंद। चक्रधरनु बंद॥
अक्रूरगोलिद त्रि। विक्रम बंदनो॥४॥

पक्षिवाहन बंदालक्ष्मणाग्रज बंद॥
अक्षय फलदा। श्रीलक्ष्मिरमण बंदनो॥५॥

निगमगोचर बंद। नित्यतृप्तनु बंद॥
नगेमुख पुरंदर। विठल बंदनो॥६॥

जयवागलि

दाससाहित्य ध्वजारोहणगीते
जयगळु आगलि अपजयगळु पोगलि
जयदेवि रमण ओलियलि कोले
जयदेवि रमण ओलियलि नम्मवि
जय रायर कीर्ति मेरेयलि कोले॥

हरियॆ सर्वोत्तम हरियॆ परदेवते
हरिदासरेंबो बिरुदिन कोले
हरिदासरेंबो बिरुदिन हेग्गाळे
हिरि बागिलोळु नुडिसेवु कोले॥

दासन माडिको एन्न

दासन माडिको एन्न स्वामि
सासिर नामद वेंकटरमण॥प॥

दुरुबुद्दिगळनेल्ल बिडिसो निन्न
करुणकवचवेन्न हरणक्के तोडिसो
चरणसेवे एनगे कोडिसो अभय
कर पुष्पवेनेन्न शिरदल्लि मुडिसो॥१॥

दृडभक्ति निनल्लि बेडि ना
अडिगेरुगुवेनय्य अनुदिन पाडि
कडेगण्णलेकेन्न नोडि बिडुवे
कोडु निन्न ध्यानव मनशुचि माडि॥२॥

मरेहोक्कवर काव बिरुदु
एन्न मरेयदे रक्षणे माडेन्न पोरेदु
दुरितगळल्लव तरिदु सिरि
पुरंदरविठल एन्ननु पोरेदु॥३॥

बिडेनो निन्नंघ्रि श्रीनिवास

बिडेनो निन्नंघ्रि श्रीनिवास एन्न दुडिसिकोळ्ळेलॊ श्रीनिवास नि–
न्नुडियॆजितल्लॊ श्रीनिवास एन्न नडेतप्पु कायॊ श्रीनिवास॥प॥

बडियॊ बेन्नल्लि श्रीनिवास नन्नोडल होय्यदिरो श्रीनिवास। ना
बडव काणेलो श्रीनिवास निन्नोडल होक्कॆनो श्रीनिवास॥१॥

पंजुपिडिवेनॊ श्रीनिवास निन्नॆंजल बळेदुंबे श्रीनिवास ना
संजे उदयके श्रीनिवास काळंजेय पिडिवॆ श्रीनिवास॥२॥

सत्तिगे चामर श्रीनिवास नानेत्ति कुणिवेनॊ श्रीनिवास निन्न
रत्नद हाविगे श्रीनिवास ना होत्तु कुणिवेनॊ श्रीनिवास॥३॥

हॆळिदंतालिहे श्रीनिवास निन्नाळिगाळागिहे श्रीनिवास अव–
रूळिगव माळ्पे श्रीनिवास एन्न पालिसॊ बिडदे श्रीनिवास॥४॥

निन्न नाम हॊळिगे श्रीनिवास कळ्ळकुनि नानिगिहे श्रीनिवास कट्टि
निन्नवरोद्दरे श्रीनिवास ननगिन्नु लज्जॆतके श्रीनिवास॥५॥

बीसि कोल्ललवरे श्रीनिवास मुद्रे कासिचुच्चलवरे श्रीनिवास मिक्क
घासिगंजेनय्य श्रीनिवास एंजलासेय बंट ना श्रीनिवास॥६॥

हॆसि नानादरे श्रीनिवास हरिदासरोळु पोक्के श्रीनिवास अवर
भाषेय कॆळिहे श्रीनिवास आवासिय सॆरिसो श्रीनिवास॥७॥

तिंगळवनल्ल श्रीनिवास वत्सरंगळवनल्ल श्रीनिवास आ–
जंगळ सवडिपे श्रीनिवास भवंगळ दाटुवे श्रीनिवास॥८॥

निन्नव निन्नव श्रीनिवास नानन्यवनरियेनु श्रीनिवास अय्या
मनिसो ताय्तंदे श्रीनिवास प्रसन्नवॆंकटद्रि श्रीनिवास॥९॥

श्रीनिवासा नीनॆ पालिसो

श्रीनिवासा नीनॆ पालिसो, श्रीतजनपाला।
गानलॊल श्री मुकुंदनॆ॥प॥

ध्यानमाळप सज्जनर मानदिं परिपालिप
वॆणुगॊपाला गॊविंद, वॆदवॆद्य नित्यानंद॥अ.प॥

एंदिगे निन्न पादब्जव पोंदुव सुख।
एंदिगे लभ्यवॊ माधवा॥
अंधकारण्यदल्लि, निंदु तत्तरिसुतिहेनॊ।
बंदु बंदु ई भवदि बेंदु नोंदेनॊ मुकुंद॥१॥

एष्टु दिन कष्टपडुवदॊ यशॊदे कंद।
दृष्टियिंदनॊडलागदॆ॥ मुट्टि निन्नभजिसलारे केट्टनरजन्मदोळु
दुष्टकार्य माडिदाग्यू इष्टनागि कैय पिडिदु॥२॥

अनुदिन अनेक रॊगंगळ आनुभविसुवेनु घनमहिम नीनॆ कॆळय्य।
तनुविनल्लि बलविल्ल, नेनेद मात्र सलुहुव।
हनुमधीश पुरंदर विठलनॆ कैय पिडिदु॥३॥

दासॊहं तव दासॊहं

दासॊहं तव दासॊहं॥प॥
वासुदॆव विगताघसंघ तव॥अ.प॥

जीवांतर्गत जीवनियामक जीवविलक्षण जीवनद॥
जीवाधारक जीवरूप राजीवभवजनक जीवॆश्वर तव॥१॥

कालांतर्गत कालनियामक कालातीत त्रिकालज्ञ॥
कालप्रवर्तक कालनिवर्तक कालॊत्पादक कालमूर्ति तव॥२॥

कर्म कर्मकृतकर्मकृतागम कर्मफलप्रद कर्मजित॥
कर्मबंध महकर्मविमॊचक कर्मनिग्रह विकर्मनाश तव॥३॥

धर्मयूप महधर्मविवर्धन धर्मविदुत्तम धर्मनिधॆ

धर्मसूक्ष्म महध्रमसंरक्षक धमसाक्षियधर्मपुत्र तव॥४॥

मंत्रयंत्र महमंत्र बीज महमंत्रराज गुरुमंत्रजित॥
मंत्रमेयमहमंत्रनियामकमंत्रदेवजगन्नाथविठल तव॥५॥

साटियुंटे श्रीनिवासन

साटियुंटे श्रीनिवासन दास कूटद मेळके
बूटकद मातल्ल केळिरो भजने माडुव ताळके॥प॥

वासुदेवन वर्णिसलु कमलासनादि सुधेंद्ररु
दास जनर समूहदळोगवासवागुत नलिवरु
सूसुतिह गंगादि नदिगळु बेसरदे बंदिरुवुवु
केशवन कोंडाड धरेयोळु मिसलळियद मधुरवु॥१॥

बारिसुत तंबूरि ताळव नारदर संस्मरिसुत
बूरि किणिकिणि मद्दळेय जंभारि स्वरदिंदरुगुत
पारिजाक्षन परम मंगळ मूरुतिय मुंदिरिसुत
मारुतन मतवरितु बहु गंभीर स्वरदिंदरुगुत।२॥

हिंदेगळिसिद हलवु दुरितवु कुंदुवुदु निमिषार्धदे
अंदिनंदिन दोष दुष्कृत ओंदु निल्लदु कडेयलि
इंदिराधव शेष बूधर मंदिरनु ता हरुषदि
मुंदे नलियुते मनके पूर्णानंदवीवनु नगुतलि॥३॥

पालयाच्युत पालयाच्युत

पालयाच्युत पालयाजित पालया कमलालय।
लीलया धृत भूधरांबुरुहोदर स्वजनोदरा॥ध्रुव॥

मध्वमानसपद्मभानुसमं स्मरप्रतिमं स्मर
स्निग्धनिर्मलशीतकांतिलसन्मुखं करुणोन्मुखं।
हृद्य कंबुसमानकंधरमक्षयं दुरितक्षयं
स्निग्धसंस्तुत रूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥१॥

अंगदादिसुशोभिपाणियुगेन संक्षुभित्येनसं
तुंगमाल्यमणींद्रहारसरोरसं खलनीरसं।

मंगलप्रदमंथदामविराजितम् भजताजितं
तं गृणे वररूप्यपीठक्रतालयं हरिमालयम्॥२॥

पीनरम्य तनूदरं भज हे मनः शुभ हे मनः
स्वानुभावनिधर्शनाय दिशंतमर्थ्यसुशंतमं
आनतोऽस्मि निजार्जानप्रियसाधकं खलबाधकं
हीनतोज्झित रूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥३॥

हैमकिंकिणिमालिकारशनांजितं तमवंचितं
कम्रकांचनवस्त्रचित्रकटिं घनप्रभयाम् घनं।
नम्रनागकरोपमोरुमनामयं शुभधीमयं
न्ऽॐयहम् वररूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥४॥

वृत्तजानुमनोज्ञजंघममोहदम् परमोहदम्
रत्नकल्पनखत्विषा हृतहृत्तमस्ततिमुत्तमं।
प्रत्यहं रचितार्चनं रमय स्वया गतया स्वयं
चित्त चिंतय रूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥५॥

चारुपादसरो जयुग्मरुचामरोच्चयचामरो–
दारमूर्धजभारमंडलरंजकं कलिभंजकं।
वीरतोजितभूषणं वरनूपुरं स्वतनूपुरं
धारयात्मनि रूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥६॥

शुष्कवादिमनोऽतिदूरतरागमोत्सवदागमं
सत्कवींद्रवचोविलासमहोदयं महितोदयं।
लक्शयामि यतीश्वरैः कृतपूजनं गुणभाजनं
धिक्क्रुतोपमरूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥७॥

नारदप्रियमाविशांबरुहेक्षणं निजरक्षणं
तारकोपमचारुदीपचयांतरे गतचिंतरे।
धीर मानस पूर्णचंद्रसमानमच्युतमानम
द्वारकोपमरूप्यपीठकृतालयं हरिमालयम्॥८॥

रूप्यपीठकृतालयस्य हरेः प्रियं दुरितापियं
तत्पदार्चकवादिराजयतीरितं गुणपूरितं।
गोप्यमष्टकमेतदुच्चमुदे ममास्त्विहनिर्मम
प्राप्य शुद्धफलाय तत्र सुकोमलं हृतधीमलं॥९॥

प्रीणयामॊ वासुदॆवं

वंदिताशॆषवंद्यॊरुवृंदारकं चंदनाचर्चितॊदारपीनांसकम्।
इंदिराचंचलापांगनीराजितं मंदरॊद्धारिवृत्तॊद्भुजाभॊगिनम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥१॥

सृष्टिसंहारलीलाविलासाततं पुष्टषाङ्गुण्यसद्विग्रहॊल्लासिनाम्।
दुष्टनिशॆषसंहारकर्मॊद्यतं हृष्टपुष्टानुशिष्टप्रजासंश्रयम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥२॥

उन्नतप्रार्थिताशॆषसंसाधकम् सन्नतालौकिकानंददश्रीपदम्।
भिन्नकर्माशयप्राणिसंप्रॆरकम् तन्न किं नॆति विद्वत्सु मीमांसितम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥३॥

विप्रमुखैः सदा वॆदवादॊन्मुखैः सुप्रतापैः क्षितीशॆश्वरैश्चार्चितम्।
अप्रतर्क्यॊरुसंविद्गुणं निर्मलं सप्रकाशाजरानंदरूपं परम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥४॥

अत्ययॊ यस्य कॆनापि न क्वापि हि प्रत्ययॊ यद्गुणॆषूत्तमानां परः।
सत्यसंकल्प ऐकॊ वरॆण्यॊ वशी मत्स्यनूनैः सदा वॆदवादॊदितः
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥५॥

पश्यताम् दुःखसंताननिर्मूलनम् दृश्यतां दृश्यतामित्यजॆशार्चितम्।
नश्यताम् दूरगं सर्वदाऽप्यात्मगम् वश्यताम् स्वॆच्छया सज्जनॆष्वागतम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥६॥

अग्रजम् यः ससर्जाजमग्र्याकृतिं विग्रहॊ यस्य सर्वॆगुणा ऐव हि।
उग्र आद्यॊऽपि यस्याऽत्मजाग्र्यात्मजः सद्गृहीतः सदा यः परम् दैवतम्॥
प्रीणयामॊ वासुदॆवं दॆवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामॊ वासुदॆवम् ॥७॥

अच्युतो यो गुणैर्नित्यमेवाखिलैः प्रच्युतोऽशेषदोषैः सदा पूर्तितः।
उच्यते सर्ववेदोरुवादैरजः स्वर्चितो ब्रह्मरुद्रेंद्रपूर्वैःसदा॥
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामो वासुदेवम् ॥८॥

धार्यते येन विश्वं सदाऽजादिकं वार्यतेऽशेषदुःखं निजाध्यायिनाम्।
पार्यते सर्वमन्यैर्न यत्पार्यते कार्यते चाखिलं सर्वभूतैः सदा॥
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामो वासुदेवम् ॥९॥

सर्वपापानि यत्संस्मृतेः संक्षयं सर्वदा यांति भक्त्या विशुद्धात्मनाम्।
शर्वगुर्वादिगीर्वाण संस्थानदः कुर्वते कर्म यत्प्रितये सज्जनाः॥
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामो वासुदेवम् ॥१०॥

अक्षयं कर्म यस्मिन् परे स्वर्पितं प्रक्षयं यांति दुःखानि यन्नामतः।
अक्षरो योऽजरः सर्वदेवामृतः कुक्षिगं यस्य विश्वं सदाऽजादिकम्॥
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामो वासुदेवम् ॥११॥

नंदितीर्थोरुसन्नामिनो नंदिनः संदधानाः सदाऽऽनंददेवे मतिम्।
मंदहासारुणाऽपांगदत्तोन्नतिं नंदिताशेषदेवादिवृंदं सदा॥
प्रीणयामो वासुदेवं देवतामंडलाखंडमंडनम्
प्रीणयामो वासुदेवम् ॥१२॥

श्री वेंकटेश स्तोत्रं

वेंकटेशो वासुदेवः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।
संकर्षणोऽनिरुद्धश्च शेषाद्रिपतिरेव च॥१॥

जनार्दनः पद्मनाभो वेंकाटाचलवासनः।
सृष्टिकर्ता जगन्नाथो माधवो भक्तवत्सलः॥२॥

गोविंदो गोपतिः कृष्णः केशवो गरुडध्वजः।
वराहो वामनश्चैव नारायण अधोक्षजः॥३॥

श्रीधरः पुंडरीकाक्षः सर्वदेवस्तुतो हरिः।
श्रीनृसिंहो महासिंहः सूत्राकारः पुरातनः॥४॥

रमानथो महीभर्ता भूधरः पुरुषोत्तमः।
चोलपुत्रप्रियः शांतो ब्रह्मादीनां वरप्रदः॥५॥

श्रीनिधिः सर्वभूतानाम् भयकृद्भयनाशनः।
श्रीरामो रमभद्रश्च भवबंधैकमोचकः॥६॥

भूतावासो गिरावासः श्रीनिवासः श्रियः पतिः।
अच्युतानंतागोविंदो विष्णुर्वेंकटनायकः॥७॥

सर्वदेवैकशरणं सर्वदेवैकदैवतम्।
समस्त देवकवचं सर्वदेवशिखामणिः॥८॥

इतीदं कीर्तितम् यस्य विष्णोरमिततेजसः।
त्रिकाले यः पठेनित्यं पापं तस्य न विद्यते॥९॥

राजद्वारे पठेद्घोरे संग्रामे रिपुसंकटे।
भूतसर्पपिशाचादिभयं नास्ति कदाचन॥१०॥

अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत्।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बंधनात् ॥११॥

यद्यदिष्टतमं लोके तत्तत्प्राप्नोत्यसंशयः ।

ऐश्वर्यं राजसन्मानं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्॥१२॥

विष्णोर्लोकैकसोपानम् सर्वदुःखैकनाशनम्।
सर्वैश्वर्यप्रदं नृणां सर्वमंगलकारकम्॥१३॥

मायावी परमानंदं त्यक्त्वा वैकुंठमुत्तमम्।
स्वामिपुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते॥१४॥

कल्याणाद्भुतगात्राय कामितार्थप्रदायिने।
श्रीमद्वेंकटनाथाय श्रीनिवासाय ते नमः॥१५॥

वेंकटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेशसमो देवो न भूतो न भविष्यति॥
एतेन सत्यवाक्येन सर्वार्थान् साधयाम्यहम्॥१६॥

कृष्णार्पणमस्तु